



युग-निर्माण का आध्यात्मिक विज्ञान

स्रष्टा की कार्ययोजना: आत्मबल, पात्रता और दैवी अनुग्रह के सार्वभौमिक नियम

क्रान्तिधर्मी साहित्य (पुस्तकमाला - 13) — स्रष्टा का परम प्रसाद-प्रखर प्रज्ञा पर आधारित।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अध्याय ५: आत्मबल



अनगढ़ता को तपाकर
परिष्कृत प्रतिभा का
निर्माण।

अध्याय ६: दैवी युग्म



मानवीय पुरुषार्थ के
पीछे ईश्वरीय शक्ति
का जुड़ाव।

अध्याय ७: पात्रता



अनुग्रह खींचने की
वैज्ञानिक क्षमता का
विकास।

अध्याय ८: उदारता



प्रामाणिकता द्वारा
ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का
चक्र।

शक्ति का पदानुक्रम: भौतिक सामर्थ्य बनाम आत्मबल

भौतिक सामर्थ्य



प्रकृति:

- तात्कालिक, क्षणिक और विनाशकारी

परिणाम:

- विपत्ति और पतन

ऐतिहासिक प्रमाण:

- भस्मासुर, महिषासुर, रावण (सिद्धियाँ उनके और सम्बन्धियों के विनाश का कारण बनीं)

आत्मबल



प्रकृति:

- स्थायी, लोकमंगलकारी

परिणाम:

- समाज का असाधारण हितसाधन

ऐतिहासिक प्रमाण:

- बुद्ध, गाँधी, चाणक्य, विवेकानन्द (स्वल्प साधनों में भी उच्चस्तरीय सफलता)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का क
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि
और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से काहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रतिभा का रसायन: तपोभट्टी मॉडल



इनपुट: अनगढ़ लोहा / मैले कपड़े
सामान्य मनुष्य की प्रसुप्त और
बिखरी हुई क्षमताएँ।



आउटपुट: फौलाद / परिष्कृत प्रतिभा
अजेय आत्मशक्ति और देवत्व का उदय,
जो युग परिवर्तन का उपकरण बनता है।

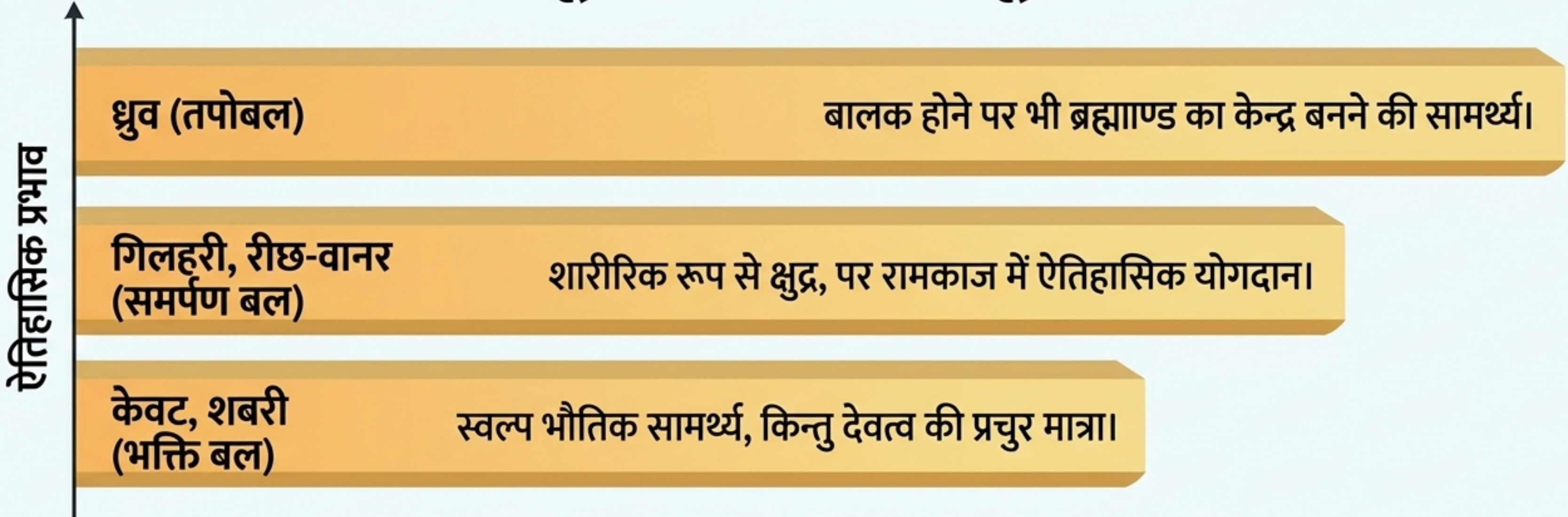
प्रक्रिया: तप और जीवन-साधना की भट्ठी
आत्मशोधन एवं लोकमंगल के क्रियाकलाप।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे
कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा
आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ ज्ञ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

भौतिक शून्यता से आत्मिक पूर्णता तक



निष्कर्ष: भौतिक सामर्थ्य स्वल्प होने पर भी देवत्व की मात्रा बढ़ाकर मनुष्य इतिहास रच सकता है।

सहयोग का विज्ञान: युग-परिवर्तन का समीकरण



मानवीय पुरुषार्थ

(अपनी दुर्बलताओं को मिटाने का साहस)



दैवी शक्ति

(सृष्टि की नियामक सत्ता का अनुग्रह)



युग परिवर्तन

(ऐतिहासिक और अभूतपूर्व नवसृजन)

तथ्य: ६०० करोड़ मनुष्यों की दुष्प्रवृत्तियों को केवल मानवीय भाग-दौड़ से नहीं मिटाया जा सकता।
इतने व्यापक परिवर्तन के लिए ईश्वरीय शक्ति का जुड़ना वैज्ञानिक अनिवार्यता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

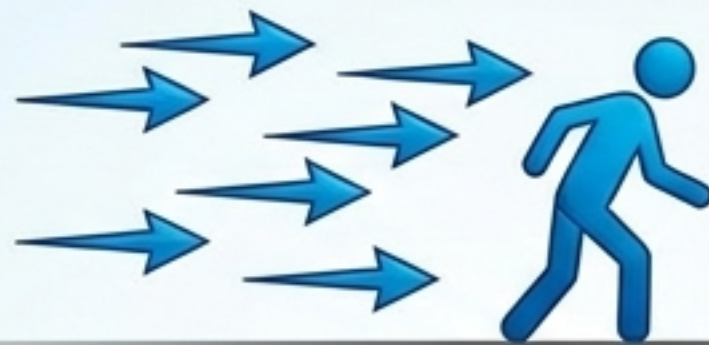
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ ज्ञ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन बीच में
आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को के साग्व
को मेरे कृन्तिधर्मी सहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

‘पीछे की हवा’ का सिद्धान्त (The Tailwind Principle)

सामने की तेज हवा (प्रतिकूल परिस्थितियाँ)



प्रगति का पथ अवरुद्ध होता है, छोटे संकट भी भारी पड़ते हैं।

पीछे की दैवी हवा (सत्साहस)



पैदल भी तेज दौड़ लेते हैं; हारती बाजी जीत में बदल जाती है
(जैसे द्वितीय विश्वयुद्ध में इंग्लैण्ड का ‘वी फॉर विकट्री’ सत्साहस)।

मार्गदर्शक और माध्यम का मॉडल

दैवी चेतना का सिद्धान्त:
'विजय मेरी, निमित्त तुम'

Architect's Note

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

चाणक्य (संकल्प) → चन्द्रगुप्त (माध्यम)

तुम्हारी दासी पुत्र वाली मनोदशा से ऊपर उठो,
विजय दिलाने की जिम्मेदारी मेरी है।

भगवान् कृष्ण (नियन्ता) → अर्जुन (निमित्त)

कौरवों को मैंने पहले ही मार रखा है,
तुझे केवल श्रेय लेना है (करिष्ये वचनं तव)।

समर्थ रामदास (वरदान) → शिवाजी (योद्धा)

तुम छत्रपति हो गए, पराजय की बात
ही मत सोचो।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर : को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदगुरु तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदगुरु तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

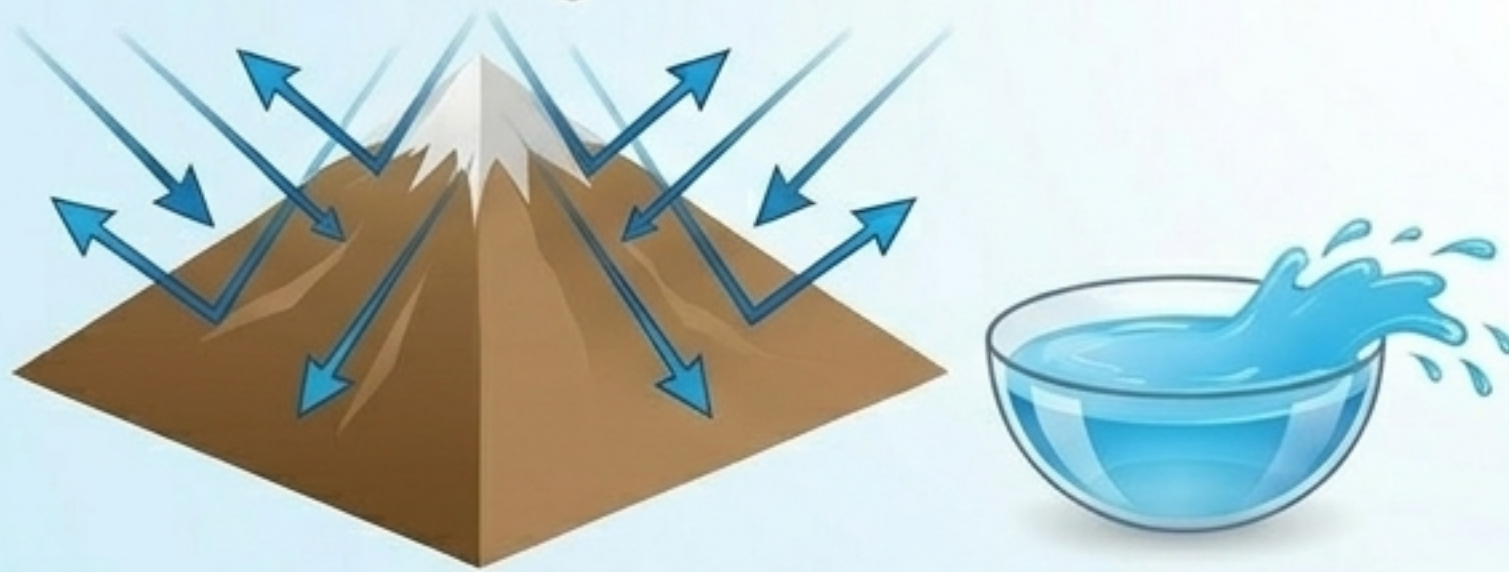
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में —सब वच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदगुरु तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

पात्रता का विज्ञान: अनुग्रह का ‘फ्लूइड डायनामिक्स’

ईश्वरीय अनुग्रह सर्वत्र समान रूप से बरसता है

अहंकार और कुपात्रता



ऊँचे टीलों पर पानी नहीं टिकता।
बिना पात्रता के अनुग्रह रुक नहीं सकता।

नम्रता और प्रामाणिकता



नदियाँ गहरी होने के कारण पानी खींच लेती हैं।
पात्रता विकसित करने पर सब कुछ अनायास ही खिंचता चला आता है। माँगने या गिड़गिड़ाने की आवश्यकता नहीं।

निदान तालिका: भ्रान्त अध्यात्म बनाम यथार्थ अध्यात्म

	❌ भ्रान्त अध्यात्म (Fake Spirituality)	✅ यथार्थ अध्यात्म (Real Spirituality)
परिभाषा	देवी-देवताओं को स्वयम्भू एजेन्टों द्वारा रिश्वत/उपहार देकर चापलूसी करना।	आत्म-परिष्कार और सर्वांग सुन्दर व्यक्तित्व का निर्माण।
अपेक्षा	बिना मूल्य चुकाए, टण्ट-घण्ट से अनुचित मनोकामनाओं की पूर्ति।	छात्रवृत्ति की तरह, योग्यता और प्रामाणिकता के आधार पर अनुदान।
परिणाम	निराशा, अविश्वास और नास्तिकता का जन्म।	दैवी शक्तियों का अवतरण और प्रखर प्रज्ञा की प्राप्ति।

निष्कर्ष: देवता मूर्ख नहीं हैं कि छोटे उपहारों के लिए दरिद्रों की तरह आँखें मूँदकर दौड़ पड़ें; वे प्रामाणिकता परखते हैं।

चुम्बकत्व का ब्रह्माण्डीय नियम



खिले फूल
तितलियों को खींचते हैं।



सघन वृक्षावली
आकाश से बादलों को खींचती है।

सिद्धान्त: ठीक इसी प्रकार, जिस व्यक्ति का चिन्तन और चरित्र उत्कृष्ट हो जाता है, वह अखिल ब्रह्माण्ड से ईश्वरीय चेतना (दैवी अनुग्रह) को अपनी ओर चुम्बक की तरह खींच लेता है।

उदारता का पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem of Generosity)



साधन से साध्य तक: 'हाथगाड़ी मॉडल'

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



बाह्य कर्मकाण्ड
(The Tool)

पूजा-पाठ केवल एक सहारा है—बच्चे को खड़ा होने में मदद करने वाली गाड़ी की तरह। यह दिशा-निर्धारण का प्रतीक है।



जीवन-साधना
(The Transition)

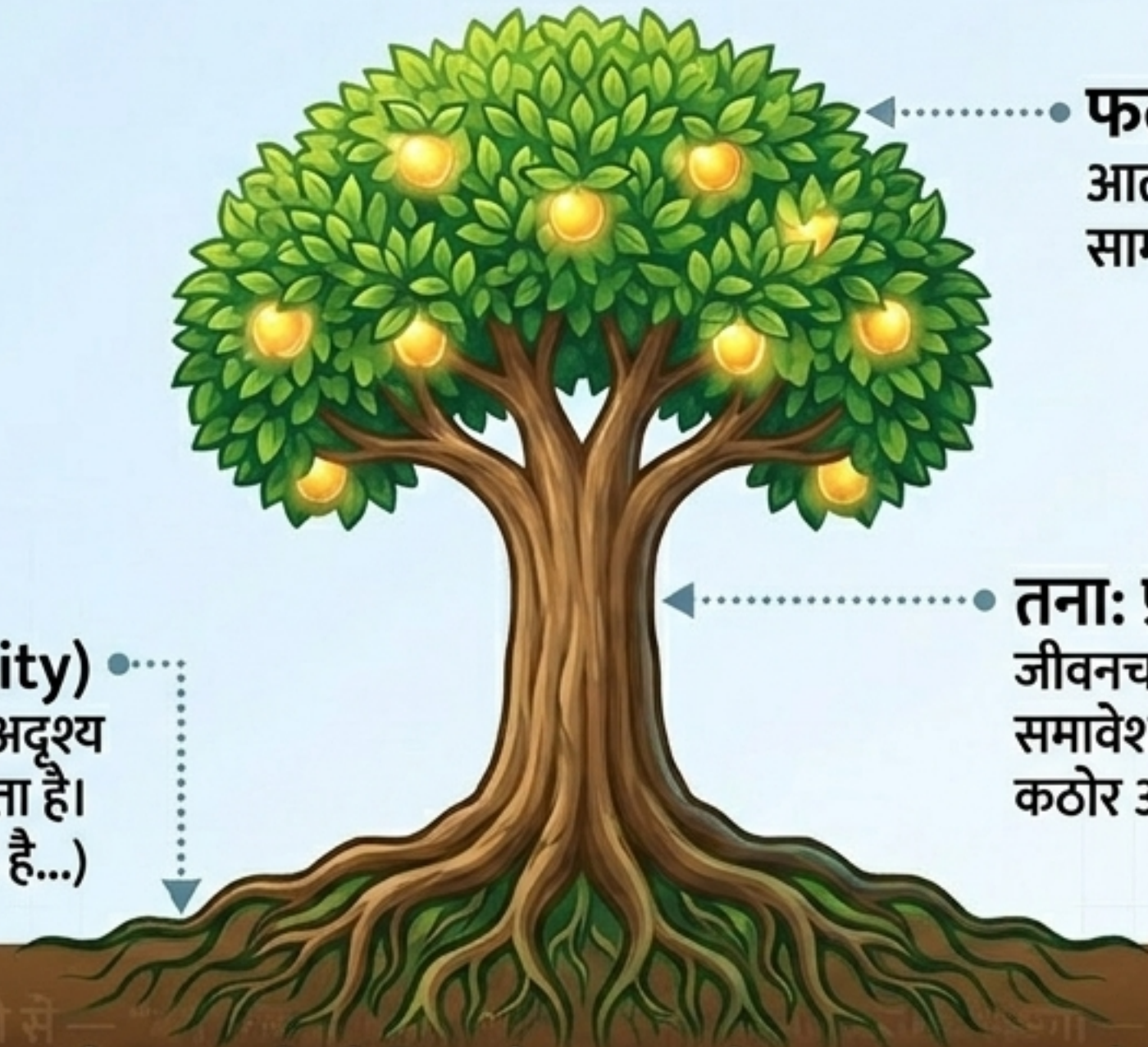
इन्द्रिय-संयम, अर्थ-संयम और विचार-संयम। कषाय-कल्मषों का आन्तरिक निराकरण।



प्रामाणिक चरित्र
(The Goal)

अपने ही पैरों पर खड़ा होना। यदि सद्भावनाओं का विकास नहीं हो रहा, तो केवल लकीर पीटी जा रही है।

यथार्थ अध्यात्म का वृक्ष



• **फल: दैवी अनुग्रह (Divine Grace)**
आत्मबल, प्रखर प्रज्ञा और युग-परिवर्तन की सामर्थ्य के रूप में ईश्वरीय सहयोग का फल।

• **तना: प्रामाणिकता (Authenticity)**
जीवनचर्या के हर पक्ष में आदर्शवादिता का समावेश। दूसरों के प्रति उदारता, स्वयं पर कठोर अनुशासन।

• **जड़ें: उदारता (Generosity)**
करुणा, ममता, और परमार्थ का वह अदृश्य आधार जो सारे पोषण को खींचता है।
(उदारता जन्मदात्री है...)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचाना ही चाहिए और आन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अन्तिम निष्कर्ष: इक्कीसवीं सदी का युग-शिल्पी

भ्रांति त्यागें



चमत्कार, जादूगरी या बिना मूल्य चुकाए ईश्वरीय वरदान की आशा छोड़ें।

पात्रता गढ़ें



तपोभट्टी में अपनी अनगढ़ता को जलाएँ। स्वयं के साथ कड़ाई और दूसरों के साथ उदारता बरतें।

ईश्वरीय योजना से जुड़ें



जब आपकी प्रामाणिकता सिद्ध होगी, तो युग-निर्माण के लिए दैवी शक्ति पीछे की हवा बनकर आपको विजय तक ले जाएगी।

**नवसृजन की इस पुण्यवेला में, तनिक-सी गरमी पाते ही मलाई दूध के ऊपर आ जाएगी।
स्रष्टा का परम प्रसाद 'प्रखर प्रज्ञा' आपका वरण करने को तत्पर है।**

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)